नीतीश मिश्रा
पूर्व मंत्री
बिहार सरकार

सदस्य
बिहार विधान सभा

Ref: 46/2021
Dt- 18-01-2021

आदरणीय मंत्री महोदय,

विषयः— **भारतीय साहित्य की 'श्रृंगार परम्परा' एवं 'भक्ति परम्परा' के प्रमुख स्तंभों में से एक मैथिल कोकिल श्रद्धेय विद्यापति जी के नाम पर भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय पुरस्कार देने की परम्परा शुरू करने के संबंध में।**

स्वनामधन्य विद्या के अधिपति बिहार के धरतीपुत्र, श्रद्धेय विद्यापति जी भारतीय साहित्य की 'श्रृंगार परम्परा' एवं 'भक्ति परम्परा' के प्रमुख स्तंभों में से एक और मैथिली के सर्वोपरि कवि के रूप में जाने जाते हें। इन्हें वैष्णव, शैव और शाक्त भक्ति के सेतु के रूप में भी स्वीकार किया गया हैं। मिथिला के लोगों को ''देसिल बयना सब जन मिठ्ठा'' का सूत्र देकर इन्होंने बिहार में लोक भाषा की जनचेतना को जीवित करने का महान प्रयास किया हैं।

हिन्दी साहित्य का प्रारंभ रामचन्द्र शुक्ल जी ने संवत् 1050 से माना हैं। प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आरंभ जिसे ''वीरगाथा काल'' मानते हैं, उनमें विद्यापति जी एक प्रमुख रचनाकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ– कीर्तिलता, कीर्तिपताका तथा पदावली हैं। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने उनके काव्य की प्रशंसा करते हुए लिखा हैं– ''गीत गोविन्द' के रचनाकार जयदेव की मधुर पदावली पढ़कर जैसा अनुभव होता हैं, वैसा ही विद्यापति जी पदावली पढ़कर''। अपनी कोकिल कंठता के कारण इन्हें ''मैथिल कोकिल'' कहा जाता है। श्रद्धेय विद्यापति जी ने संस्कृत, अवहट्ट एवं मैथिली में कविता रची। भू परिक्रमा, पुरूष परीक्षा, लिखनावली आदि अनेक रचनाएँ साहित्य को दी। पदावली उनकी हिन्दी रचना हैं, और वही इनकी प्रसिद्धि का कारण हैं। पदावली में कृष्ण–राधा विषयक श्रृंगार के पद हैं। इनके आधार पर इन्हें हिन्दी में राधाकृष्ण विषयक श्रृंगारी काव्य के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है।

श्रद्धेय विद्यापति जी जैसे साहित्य मनीषी के नाम पर भारत सरकार ने मैथिली लोकभाषा अथवा हिन्दी साहित्य सृजन करने वाले को सम्मानित करने हेतु विद्यापति जी के नाम लोक साहित्य पुरस्कार की परम्परा को शुरूआत करने की आवश्यकता हैं।

112, कौटिल्य नगर, पटना 800014
Tel. : 0612 222 6263 Fax : 0612 222 5218 E-mail : nitishmishraoffice@gmail.com

श्रद्धेय विद्यापति जी बिहार के ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष के आदि कवियों में एक थे। उनकी तुलसी, सूरदास, कबीर की श्रेणी में गिनती होती हैं।

श्रद्धेय विद्यापति जी के नाम पर राष्ट्रीय पुरस्कार शुरू करने से देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लोगों में श्रद्धेय विद्यापति जी को जानने की इच्छा बलवती होगी। श्रद्धेय विद्यापति जी के नाम से पुरस्कार की घोषणा से विद्यापति जी नहीं, बल्कि भारत सरकार सम्मानित होगी। सनातन धर्म हमें अपने पूर्वज महापुरूषों को याद रखने की शिक्षा देता हैं। भारत की संस्कृति को आगे बढ़ाने में वर्तमान यशस्वी माननीय प्रधानमंत्री जी का सदप्रयास सराहनीय है। ऐसे में हमारा भी दायित्व है कि श्रद्धेय विद्यापति जी जैसे सरस्वती के वरदपुत्र को समुचित स्थान दें।

अतः अनुरोध है कि बिहार के धरोहर श्रद्धेय विद्यापति जी के नाम पर लोकभाषा एवं साहित्य सृजन में राष्ट्रीय पुरस्कार देने की शुरूआत करने पर विचार करना चाहेंगे।

नव वर्ष की मंगलकामनाओं के साथ!

सादर,

भवदीय,

Nitish Mishra

(नीतीश मिश्रा) 18.1.2021

सेवा में,

श्री नित्यानंद राय जी,

माननीय गृह राज्यमंत्री,

भारत सरकार।